

• दो हाललो •

अब न दूटो डाल से- हुँस "श्रीबाबाश्री" स्मृत्यु
सब के बिद्धे अब मिले- नरतन में हो आय

स्कई हरि- हर अंग हैं- इक दूजे के नाथ
ऊँचे भाग "श्रीबाबाश्री" के- जौँहरी अपने साथ

आर्तभाव करके सदा- हरि को लैव पुकार
कहें "श्रीबाबाश्री" तेरे भाव से- हरि करेंगे पार

बात सुनी जो जीव की- है कारज में ध्यान
का "श्रीबाबाश्री" मुख से कहें- जगत भयो गुनवान

भटक- भटक नर चल दियो- पर मुख निकस्ये नाय
अब "श्रीबाबाश्री" हर जीव को- कौन विद्यि स्मृत्यु

न भागो दूर "श्रीबाबाश्री" जी से- हैं सच्चा दरबार
जग में उल्टी बह रही- श्री रेवा जी की धार

चरण चिन्ह हिय में बसे- श्री मात्- पिता जी के लाज
श्री रेवा जी साथ "श्री बाबा श्री" जी के और चलें श्री गणराज

दुख में दुखिया न बनो- सुख में न खो जाव
कहें "श्री बाबा श्री" हर जीव से- नित पढ़ हरि गुन गाव

दुनियाँ दरिया बन गई- रेवा बनी जहाज
अब "श्री बाबा श्री" खल- धर्म से- धरो धरनी की लाज

धर धरिरज- मीठो कहो- धरिरज में मिल जाव
मन "श्री बाबा श्री" भटकन लगो- धर धरिरज समझाओ

झूँहे काय- अजमात हो- कोनड़ ऊंहन पाय
देव लोक के, सब धनी- साथ "श्री बाबा श्री" के आय
झानी- पढ़- पढ़ बन गये- कर लो तनिक विचार
चारों वर्ण "श्री बाबा श्री" अब- भये एक- थे चार

युरु प्रथा प्राचीन है- रोज नवाँ माथ
कृपा "श्री बाबा श्री" गुरु चरण की- हो गई रेवा साथ

हरि में हरजैसे मिठे - रें सहै तुम मिठजाब
कहें "श्रीबाबाश्री" हरजीवसे - हरि-हर के युन गाब

जीतहै जियरा पिस रहो - मनुआं हैं बैचेन
मैया दास "श्रीबाबाश्री" से - हैं प्रसन्न दिन रैन

जी चाही हर चीज ला - होड़ दो मन से मैल
तब "श्रीबाबाश्री" सीधी करे - जग की उल्टी ज़ेल

जीवन इक जदिया बनी - रेवा बनी जहाज
स्त्य - धर्म लोहा बने - रखी "श्रीबाबाश्री" की लाज

जीवन भर जियरा जरे - करते तनक विचार
अब लौ मान "श्रीबाबाश्री" की - दओ रेवा नैं सार

होत उदय जब पुण्य को - शुभ कर्मों के साथ
हिय "श्रीबाबाश्री" रेवा बसी - घड़ी पकड़ के हाथ

जग में काहे आये हो - कहत "श्रीबाबाश्री" विचार
यज्ञ, दान, तप, धर्म को - भूल गयो संसार

जग-माटी-के दियों से- मिठा रहे उंधार
 संग "श्रीबाबाश्री" रेवामणि-कर देजग उज्ज्यार

कई जन्मों के पुण्य से- मिठा "श्रीबाबाश्री" संयोग
 मन न हौड़े कुटिलता, तासे मलो वियोग

काम न हूदे उंत लौ- सुन लो चतुर सुजान
 कहें "श्रीबाबाश्री" हर जीव से- काम ना आवे काम

करनी करके रो रहे- जग के सब नरनार
 हैं "श्रीबाबाश्री" मुरखा-महा- लियो जन्म को सार

खुद दूटा तू डाल से- हूँस "श्रीबाबाश्री" समझाय
 तब के बिहुड़े अब मिले- नरतन में लो आय

मनुआँ स्याँचीन सुने- दिन भर सुन ले लबार
 अब "श्रीबाबाश्री" स्याँची कहें- मनुआँ लेव सम्हार

मानुष तन अनमोह है- विरथा नहीं गमोव
 अब "श्रीबाबाश्री" हर जन्म में- मर्हे से नेह लबाव

माटी रो-रो-कह रही- कल युग के सब खेल
सत्य "श्रीबाबाश्री" का धर्म है- माटी से कर मेल

माटी की घर्जनी बनी- निकर गये युग तीन
मिला जहर कलिकाल में- भई "श्रीबाबाश्री" धरा दी

मात पिता तुमके मिले- उबन बनो उनाथ
कहें "श्रीबाबाश्री" जो विधि करे- फक्कड़ उनके साथ

मात पिता दोठ मिल राये- चढ़ "श्रीबाबाश्री" चहुँ ओर
दौ उँसु उन की धार पे- रेवा है वित चोर

माता भक्ति रो रही- कर बेरों का ध्यान
बचा "श्रीबाबाश्री" सत् धर्म को- चबा रहे बुनवान
मर्क- ने सब कुद दे दिया- देख "श्रीबाबाश्री" के भाव
फसी आज मझ धार में- जगत जीव की नाव

निर्भय हो के तुम जियो- करियो श्रीमर्क जी को ध्यान
कहें "श्रीबाबाश्री" हर जीव रे- श्रीमैया जी बाँटे शान

पार करे नैया तेरी- रेंसे खेवन हार
 कहें "श्रीबाबाश्री" तेरे भाव से- वंश होय उद्धार

पल द्वे पल को होड़ दो- जीवन को जंजाल
 जो "श्रीबाबाश्री" हरि हर भजे- उन्हेन व्यापे काल

परि परमेश्वर होत हैं- इतना सबको ज्ञान
 जब "श्रीबाबाश्री" देखन चले- दिखा जीव अंजान

पिसो मनहि मन पाट में- जिया ने पावै ठौर
 हर पल रेवा करत है- दास "श्रीबाबाश्री" चैतौर

रेज दया को देखत- अब ने बनो गँमार
 मात पिता रेवा सहित- आये "श्रीबाबाश्री" तेरेद्वार

रीत जियन की मिल वहि- घर बैठे प्रभु द्वार
 कहें "श्रीबाबाश्री" हर जीव से- हरि ही पालन हार

समय बहुत अनमोल है- अबन "श्रीबाबाश्री" गँगांव
 रेवा की वहि विधि से- हूँसत हूँसत फल पाव

स्याँचे की संगत मिली- स्याँचे बन के आय
जब "श्रीबाबाश्री" करूँगी करी- स्याँचे ही कहलाव

स्वत्य- धर्म- भवित्व बिना- जीवनींदभर सेय
मौत खड़ी हर द्वार पर- मति "श्रीबाबाश्री" की रेय

शुहू भाव जो कोहै करे- वो "श्रीबाबाश्री" फल पाय
स्यात लोक की मालकिन्न- पिता सहित मिल जाय

उखड़त झूबल तुम मिले- सुन लो चतुर सुजान
रीत जियन की जो करे- वो "श्रीबाबाश्री" द्वजवान

बात जिया की मान लो- रो को मन को कम
चल रहीं स्याथ "श्रीबाबाश्री" के- रेका इनको नम

दीर्ज स्वो के न जियो- करीयो मर्जू को ध्यान
कहें "श्रीबाबाश्री" हर जीव से श्री मैया जी बांटे शान

भिला अपने वर्ण का नहीं, भला सभी वर्णों का
घोखे से श्वान दे घला, "श्रीबाबाश्री" श्याम वर्ण का

बिन पराग चम्पा खिली- भर परखुरी में बास
"श्रीबाबाश्री" अब मान लो- भँवरन आहे पास